## OUR PUBLICATIONS

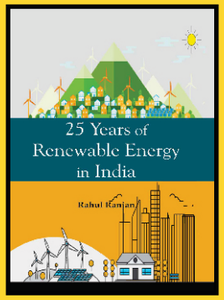


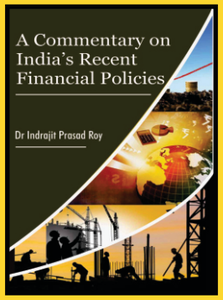


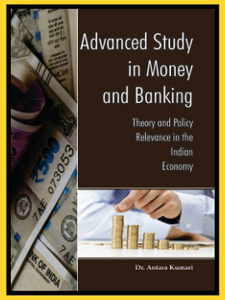


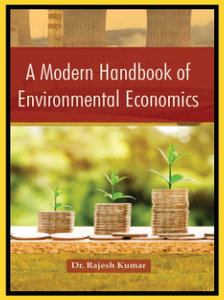


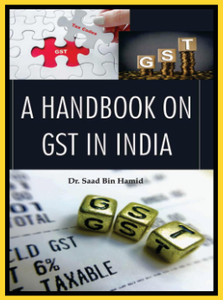


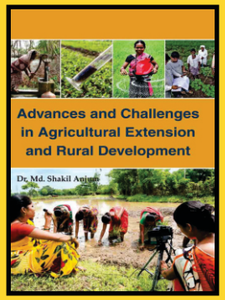

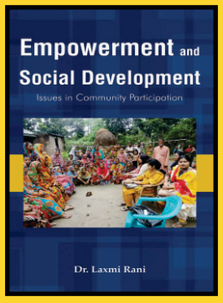


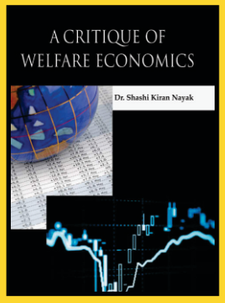


Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916



ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020


# दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

# दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

**डॉ. अश्विनी महाजन**

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

**डॉ. प्रसून दत्त सिंह**

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

**डॉ. फूल चन्द**

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

**दृष्टिकोण प्रकाशन**

वर्ष : 12 अंक : 6 ❑ नवम्बर-दिसम्बर, 2020

# दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर
डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

**संपादकीय सम्पर्कः**

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

**ISSN 0975-119X**

**नोटः** पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

# सम्पादकीय

## सोशल मीडिया कंपनियों का राजनीति में बढ़ता दखल

कुछ समय पूर्व यह विषय प्रकाश में आया कि कैम्ब्रिज एनालेटिका नाम की एक डाटा कंपनी ने 8.7 करोड़ लोगों के फेसबुक डाटा के आधार पर अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के चुनाव अभियान में काम किया और ट्रंप की विजय में इस कंपनी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रश्न यह है कि कैम्ब्रिज एनालेटिका को फेसबुक का डाटा कहां से मिला, तो यह बात स्पष्ट है कि वो फेसबुक कंपनी से ही प्राप्त किया गया। यूं तो फेसबुक कंपनी द्वारा अपने डाटा बेचने के कई साक्ष्य मिलते हैं, और फेसबुक के मालिक मार्क जुकेरबर्ग ने इस संबंध में माफी भी मांगी थी, लेकिन भविष्य में इस प्रकार के कृत्य की पुनरावृति नहीं होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

वर्ष 2018 में यह बात सामने आई कि इसी कैम्ब्रिज एनालेटिका कंपनी ने भारत की कांग्रेस पार्टी के लिए फेसबुक और ट्विटर के डाटा का उपयोग कर 2019 के चुनावों के लिए मतदाताओं के रूझान को बदलने के लिए कार्य करने का प्रस्ताव रखा। इस कंपनी की बेवसाईट पर यह दावा भी किया गया था कि वर्ष 2010 के चुनावों में उसने बिहार चुनावों में विजयी दल के लिए काम किया था। राजनीतिक दलों के लिए चुनावों की दृष्टि से सोशल मीडिया कंपनियों के डाटा का दुरूपयोग एक सामान्य बात मानी जाने लगी है।

लेकिन हालिया अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव में इन सोशल मीडिया कंपनियों का दखल और अधिक सामने दिखाई देने लगा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की लगभग सभी ट्वीटों पर ट्विटर कंपनी की टिप्पणी आ रही थी। इससे स्वभाविक तौर पर राष्ट्रपति ट्रंप के सभी बयानों को संदेहास्पद बनाने में इस कंपनी की खासी भूमिका रही। हाल ही में अमरीका में हुए हिंसक प्रदर्शनों के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर एकाउंट सस्पेंड कर दिए जाने के कारण ट्विटर कंपनी बड़े विवाद का केन्द्र बन गई है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि इन सोशल मीडिया कंपनियों के पास इन प्लेटफार्मों को इस्तेमाल करने वाले ग्राहकों की निजी जानकारियां काफी बड़ी मात्रा में होती हैं। ये कंपनियां उनके सामाजिक रिश्तों, जात-बिरादरी, आर्थिक स्थिति, उनकी आवाजाही, उनकी खरीदारियों समेत तमाम प्रकार के डाटा पर अधि कार रखती हैं और इस डाटा का उपयोग वे राजनीतिक दलों के हितसाधन में भी कर सकती हैं। ऐसे में वे प्रजातंत्र को गलत तरीके से प्रभावित कर सकती हैं। हालांकि यदि सोशल मीडिया का उपयोग ईमानदारी से किया जाए तो उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन यदि ये सोशल मीडिया कंपनियां राजनीति को प्रभावित करने का व्यवसाय करने लगे, तो दुनिया में लोकतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं ही नहीं बल्कि सामाजिक तानाबाना भी खतरे में पड़ जाएगा।

हालांकि ट्विटर कंपनी द्वारा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एकांउट को सस्पेंड करने के पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि डोनाल्ड ट्रंप के बयान अमरीका में शांतिपूर्वक सत्ता हस्तांतरण के लिए खतरा हैं, लेकिन कुछ समय पूर्व फ्रांस में एक समूह द्वारा हिंसक गतिविधियों को औचित्यपूर्ण ठहराने वाली मलेशिया के प्रधानमंत्री मोहातिर मोहम्मद की ट्वीट के बावजूद उनके ट्विटर एकाउंट को सस्पेंड न किया जाना दुनिया में लोगों को काफी अखर रहा है।

### अत्यंत ताकतवर हैं ये टेक कंपनियां

गौरतलब है कि अकेले भारत में ही फेसबुक के 33.6 करोड़ से ज्यादा एकाउंट हैं, जबकि इस कंपनी द्वारा चलाई जा रही मैसेजिंग, वायस एवं वीडियो कॉल एप्लीकेशन के 40 करोड़ से ज्यादा ग्राहक हैं। इसी प्रकार फेसबुक इंस्टाग्राम एप की भी मालिक है, जो फोटो और विडियो साझा करने की एक लोकप्रिय एप्लीकेशन है। इससे सीधा-सीधा अंदाज लगाया जा सकता है कि भारत की एक बड़ी जनसंख्या का निजी, आर्थिक एवं सामाजिक डाटा इस कंपनी के पास है। इसी प्रकार भारत में ट्विटर के लगभग 7 करोड़ और दुनिया में 33 करोड़ एकाउंट हैं। फेसबुक, व्हाट्एप, इंस्टाग्राम, ट्विटर, लिंकेडिन आदि सोशल मीडिया ऐप्स हालांकि मुफ्त में अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं, लेकिन अपने बड़े डाटाबेस का उपयोग वे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए करती हैं। इसी प्रकार सर्च इंजन चलाने वाली गूगल कंपनी भी अनेकों बार अपने लॉगरिथम का गलत इस्तेमाल करने की दोषी पाई गई है। आज भारत में विज्ञापन की दृष्टि से गूगल और फेसबुक सर्वाधिक आमदनी कमाने वाली कंपनियां बन चुकी है। इसी प्रकार अन्य कंपनियों के भी अपने-अपने बिजनेस मॉडल हैं। ये कंपनियां उपभोक्ताओं को काफी संतुष्टि भी प्रदान कर रही हैं, जिसके कारण उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है।

लेकिन इनकी बढ़ती लोकप्रियता और इन कंपनियों पर किसी भी प्रकार के अंकुश के अभाव में इन कंपनियों से समाज के तानेबाने को बिगाड़ने और लाभ के लिए कार्य करते हुए प्रजातंत्र को प्रभावित करने की केवल आशंकाएं ही नहीं बल्कि वास्तविक खतरे भी बढ़ते जा रहे हैं। गौरतलब है कि इन कंपनियों के कार्यकलापों और लॉगरिथम में पारदर्शिता का पूर्णतया अभाव है। और यह बात भी स्पष्ट है कि ये कंपनियां लाभ के उद्देश्य से काम करती हैं और अपने शेयर होल्डरों के लिए अधिकतम लाभ कमाने के लिए अग्रसर रहती हैं। इसलिए स्वभाविकतौर पर, चाहे कानून के दायरे में ही रहकर, ये कंपनियां लाभ

कमाने के लिए कुछ भी कर सकती हैं। चूंकि इलैक्ट्रॉनिक सोशल मीडिया हाल ही में आस्तित्व में आया है, इसलिए विभिन्न देशों के कानून उनको नियंत्रित करने में स्वयं को अक्षम महसूस कर रहे हैं। ऐसे में किसी भी कानूनी बाध्यता के अभाव में ये कंपनियां सामाजिक और राजनीतिक तानेबाने और लोकतंत्र की भावनाओं पर चोट कर सकती हैं।

हाल ही में एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा ध्यान में आया जब चीन की कुछ मोबाईल एप्स अमानवीय एवं असमाजिक कृत्यों में संलग्न थी, तो भी उन्हें प्रतिबंधित करने में सरकार को कानून के अनुसार निर्णय लेने में लंबा समय लगा। हालांकि जनता में चीन के प्रति बढ़ते आक्रोश के चलते बड़ी मात्रा में ऐसी एप्स प्रतिबंधित कर दी गई हैं, लेकिन फेसबुक, व्हाट्सऐप, इंस्टाग्राम, ट्विटर इत्यादि एप्स पर अंकुश लगाना आसान कार्य नहीं होगा। ऐसे में इन कंपनियों द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को प्रभावित करने का खतरा हमेशा रहेगा।

## क्या हो सकता है समाधान?

इन कंपनियों के संभावित खतरों के मद्देनजर चीन ने प्रारंभ से ही इन एप्स को अपने देश में प्रतिबंधित किया हुआ है और इन एप्स के मुकाबले में चीनी एप्स को विकसित किया गया है। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर इत्यादि के उनके अपने ही विकल्प हैं। भारत भी ऐसा प्रयास कर सकता है कि चाहे इन सोशल मीडिया एप्स को जारी भी रखा जाए, लेकिन साथ ही साथ उनके विकल्प भी उपलब्ध हों। बड़ी संख्या में चीनी एप्स को प्रतिबंधित करने के बाद देश में भारत के ही स्टार्टअप्स के द्वारा अनेकों प्रकार के एप्स विकसित किए भी गए हैं।

इसी प्रकार सरकार सोशल मीडिया एप्स के द्वारा उनके डाटा के दुरूपयोग को रोकने के लिए डाटा संप्रभुता हेतु कानून बनाकर इन कंपनियों को पारदर्शी तरीके से अपने डाटा को भारत में ही रखने के लिए बाध्य कर सकती है। इन कंपनियों द्वारा डाटा माइनिंग को हतोत्साहित करते हुए भी लोगों के निजी डाटा के दुरूपयोग को कम किया जा सकता है। प्रौद्योगिकी विकास के इस युग में उपभोक्ता संतुष्टि के साथ-साथ देश की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को सुरक्षित रखना और सामाजिक तानेबाने को नष्ट करने के प्रयासों को रोकना यह सरकार की जिम्मेवारी है। इसके लिए इन सोशल मीडिया कंपनियों के प्रभावी नियंत्रण हेतु कानून बनाने के दायित्व से सरकारें विमुख नहीं रह सकती।

**संपादक**

# इस अंक में


महिलाओं के मानवाधिकारों का सशक्तिकरण : संयुक्त राष्ट्र संघ के अभिसमयों का विवेचन–कुमारी वन्दना 1

स्वातंत्र्योत्तर नेहरूवादी राजनीति में पत्रकारिता का स्वरूप–निधि सिंह 4

जिला सरकार की परिकल्पना व अनुप्रयोग : एक विमर्श–राजू कुमार पाण्डेय 6

भारत में कोरोना संक्रमण काल के पर्यावरण पर प्रभाव एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० विजय कुमार वर्मा 9

पर्यावरण पर आधुनिक कृषि के प्रभावों का भौगोलिक विश्लेषण–हरि शंकर गुप्ता 16

धौलपुर में डांग क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम का मूल्यांकन–संजय सिंह राघव 20

वायु प्रदूषण का प्रभाव एवं संरक्षण एक भौगोलिक अध्ययन–महेश चन्द मीना 26

भारत में खाद्यान्न स्थिति एवं खाद्य सुरक्षा का भौगोलिक अध्ययन–डॉ० रितेश कुमार अग्रवाल 31

आओ पेपे घर चले: वैश्विक परिवेश में नारी–डॉ० अर्चना मिश्रा 36

गुरु नानक वाणी में प्रस्तुत पंजाबी संस्कृति : एक अध्ययन–अमृतपाल कौर 38

हिन्दी साहित्य एवं अनुवाद : अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में–डॉ० (श्रीमती) कंचना सक्सेना; ऋतु वर्मा 41

कक्षा-कक्ष में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) (सम्भावनाऐं एवं चुनौतियां)–डॉ० कैलाश पारीक 44

मध्यकालीन भारत की शिक्षा व्यवस्था (1206-1707) एक ऐतिहासिक अध्ययन–प्रो० कार्तिक प्रसाद यादव 48

हरदोई जनपद के बिलग्राम तहसील का पुरातात्त्विक सर्वेक्षण–डॉ० श्याम प्रकाश 53

जनप्रतिनिधियों का राजनीति संस्कृति स्वरूप संबंधी विचार विमर्ष–डॉ० जितेन्द्र पाटीदार 61

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी साहित्य–डॉ० दिनेश्वर कुमार महतो 64

वर्तमान समय में ई-गवर्नेंस के माध्यम से ग्रामीण परिवेश का चहुमुखी विकास 'एक अध्ययन'–डॉ. कविता अग्रवाल; चन्दना शर्मा 66

सरोज स्मृति पर सम्यक् दृष्टि–डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रहरि 69

हवेली संगीत एवं पंडित जसराज का अंत: संबंध–स्नेहा कुमारी 72

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में वी-चित्रण (Vee Diagram) विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन–लालजी यादव; डॉ० सुधांशु सिन्हा 75

भारत में कुपोषण एवं स्वास्थ्य - एक अध्ययन–डॉ० मनोज कुमार 81

ग्राम एवं किसान जीवन का यथार्थ : 'अकाल में उत्सव' उपन्यास के सन्दर्भ में–मन्नू देवी 85

मोहन सपरा की कहन-भंगिमा–प्रो० सुधा जितेन्द्र; आत्मा राम 88

महिलाओं के कौशल विकास में एन.जी.ओ. की भूमिका (झारखंड के बगोदर-सरिया अनुमंडल के संदर्भ में)–अरुण कुमार 93

स्वतंत्रता से पूर्व बद्री-केदार यात्रा मार्ग पर स्थित चट्टियाँ एवं उनका सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से ऐतिहासिक अध्ययन–ओम प्रकाश मनोड़ी 96

रमेश उपाध्याय की कहानियों में स्वातंत्रयोत्तर भारतीय समाज में नारी की स्थिति–मीनाक्षी; डॉ० सुमन राठी 101

गलवान के संदर्भ में भारत चीन सीमा पर गतिरोध एवं भारतीय सुरक्षा–डॉ० मनीष लाल श्रीवास्तव 104

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857 ईस्वी) एवं अवध की रियासतें–डॉ० राजकुमार वर्मा 109

भाषा विकास–रवीन्द्र कुमार मिश्र 112

मध्य हिमालय के पशुचारण विवादों में लोकदेवताओं एवं खून्दों की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन –डॉ० सुभाष चन्द्र; डॉ० राजपाल सिंह नेगी 115

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक व रोजगार के अधिकार का विश्लेषण–डॉ० ममता यादव; शिव प्रताप यादव 129
स्त्री विमर्श के विशेष सन्दर्भ में उपन्यास 'दुक्खम-सुक्खम'–सुरजीत कौर 133
रीवा संभाग मे कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण–प्रो० शिव कुमार दुबे; सितेश भारती 136
शिक्षण के निमित्त अग्रिम व्यवस्थापक प्रतिमान पर आधारित अनुदेशन सामग्री का महत्व–अनुपम अग्रवाल; डॉ० बाबूलाल तिवारी 143
शुक्रनीति में सप्ताङ्ग् सिद्धान्त–डॉ० अनुजा सिंह 147
हिंदी साहित्य में मुशर्रफ आलम जौकी का योगदान–गुलशन समीना रियाज 151
गढ़वाल लोक देवताओ के प्रतीक चिन्हो का अध्यन: एक प्रारंभिक विवेचन–डॉ० सपना 154
व्यक्तित्व विकास और बालमनोविज्ञान: हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में–डॉ० अमिता तिवारी 157
असमिया साहित्य की एक कालजयी रचना 'संस्कार': एक विवेचन–कुल प्रसाद उपाध्याय 161
जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक चिंतन का विश्लेषण व वर्तमान प्रासंगिकता–डॉ० अनिता जोशी; डॉ० चन्द्रावती जोशी 164
मीराबाई की रचनाओं में प्रेम भावना–डॉ० जी० पद्मावती 169
आदिवासी बहुल क्षेत्र में उच्च शिक्षा की स्थिति (राजस्थान के डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ जिलों का अध्ययन)–डॉ० मुख्त्यार अली 173
न्यायपालिका का एक नवीन दृष्टिकोण : न्यायिक-सक्रियता एवं जनहित-वाद–चन्द्रभान सिंह 184
कोरोना से क्वॉरन्टीन् होती 'शिक्षा-व्यवस्था'–खुशबू साव 190
भारत में नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन: एक भौगोलिक विवेचन–अशोक कुमार; डॉ० सुधीर मलिक 193
भारत से पलायन: एक संक्षिप्त परिचय–किशलय कीर्ति; चन्दन कुमार 198
मध्यवर्ग का आत्मसंघर्ष और मोहन राकेश का साहित्य–डॉ० रतन कुमार 201
उपेक्षित जीवन की त्रासद गाथा :'मुरदा-घर'–गंगा कोइरी 206
मूल्य और शिक्षा–रवि कान्त 209
राष्ट्रीय काव्यधारा में मैथिली शरण गुप्त का स्थान–डॉ० भगत गोकुल महादेव 213
वैदिक वाङमय में वर्णित विभिन्न चिकित्सा पद्धतियाँ–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० सन्जू नागर 216
हिन्दी और लोकभाषाओं में लोकजीवन–डॉ० आस्था तिवारी 220
समकालीन उपन्यासों में व्यक्त थर्ड जेंडर का त्रासद जीवन–राज कुमार शर्मा 224
विजय जोशी के कथा साहित्य में बाल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण–डॉ० गीता सक्सेना; श्रीमती सुमन डागर 228
रामचरितमानस का लोकपक्ष–डॉ० राजेश कुमार शर्मा 231
कालिदासस्य मालविकाग्निमित्रम्–डॉ० सुमन कुमारी 237
गिरीश पंकज का रचना संसार–अमनदीप कौर; डॉ० सुनील कुमार 241
गीतांजलि श्री के कहानी-संग्रह 'अनुगूँज' का अनुशीलन–बंधना सलारिया; डॉ० सुनील कुमार 248
लीलाधर मंडलोई का रचना-संसार–तजिंदर कौर; डॉ० सुनील कुमार 254
अध्यापक शिक्षा में रचनावादी सिद्धांत और व्यवहार का अध्ययन–नगनारायण उपाध्याय 262
प्राचीन भारतीय कला एवं साहित्य में योग : एक विश्लेषण–डॉ० मोहन लाल चढ़ार 266
हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में विसंगति निरूपण–चुन्नीलाल 273
21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आर्थिक पक्ष : 'आदिवासी समाज' के विशेष संदर्भ में–अनिल कुमार; डॉ० रीता सिंह 276
गुरु नानक बाणी जपु तथा योग दर्शन : जीवन दर्शन के संदर्भ में–दविन्द्र सिंह 279
महिला खिलाड़ियों के बीच प्रतिस्पर्धी व्यवहार और नेतृत्व व्यवहार की तुलना–डॉ० विकास प्रजापति; डॉ० अकांक्षा प्रजापति; डॉ० कपिल दवे 284
प्रातिशाख्य परम्परा में वाजसनेयी-प्रातिशाख्य का महत्त्व एवं वैशिष्ट्य–डॉ० बाबूलाल मीना 287

संस्कृत के प्रमुख पुराणों में पर्यावरण चेतना–डॉ० आशा सिंह रावत 290
स्वातंत्रोत्तर भारत की सामाजिक समरसता की चुनौतियाँ एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन–डॉ० हरबंस सिंह 296
ऑन लाईन शिक्षण एवं प्रभाव–डॉ० महेश कुमार शर्मा; डॉ० श्याम सुन्दर कौशिक 300
तुलसीदास के जीवन संबंधी विवादित विविध दृष्टिकोण (जन्म संबंधित विवादित मुद्दे)–डॉ० मंजुला 304
सन साठ के बाद की हिन्दी कविता में भाषा और संवेदना की अन्त: संगति–डॉ० रंजीत सिंह 308
लक्ष्मीनारायण मिश्र के नाटकों में सामाजिक आदर्श–डॉ० उमेश कुमार शर्मा 312
मोक्ष : मानव जीवन का परम लक्ष्य–डॉ० प्रिय रंजन 318
प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता का अभिभावकों के दृष्टिकोण से सर्वेक्षणात्मक अध्ययन (प्रयागराज जनपद के विशेष संदर्भ में) –डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 321
अलवर जिले में भूमि उपयोग एवं फ़सल प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन–राजेन्द्र परेवा; डॉ० विजय कुमार वर्मा 326
भारत में उच्च शिक्षा का निजीकरण : एक अध्ययन–नागेश्वर कुमार 331
सवाईमाधोपुर ज़िले में जल संसाधनों का भौगोलिक अध्ययन–अंकुश मीना; डॉ० जगफूल मीना 337
प्राचीन नगरी मल्हार के स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं मृणमूर्तियों का ऐतिहासिक विश्लेषण–मंजू साहू; डॉ० रामरतन साहू 346
संत साहित्य पर आचार्य रजनीश (ओशो) की अभिनव दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 350
भारतीय समाज में बढ़ती आर्थिक व सामाजिक विषमताओं के परिणामों एवम चुनौतियों के परिपेक्ष्य में एक अध्ययन–शुभ सेजवार 354
लॉक डाउन में भिवाड़ी के वायु प्रदूषण स्तर का भौगोलिक विश्लेषण–सत्यदेव 360
कोरोना महामारी से उपजी इंफोडेमिक में आरोग्य सेतु की भूमिका एवं स्थिति का अध्ययन–डॉ० अमरेन्द्र कुमार 364
"अंधा युग" में प्रतीकात्मकता–डॉ० राजेश्वरी सिंह तोमर 368
मानव तस्करी (बाल श्रम) से सम्बन्धित केसों का अध्ययन–सतीश कुमार 371
नवीन शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालयों की भूमिका–डॉ० अर्चना शुक्ला 375
अमेरिका में नस्लीय भेदभाव का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–योगेन्द्र प्रसाद शर्मा 379
बच्चों एवं महिलाओं के विकास में आंगनबाड़ी केंद्र की भूमिका–स्मिता कुमारी 382
बदलते नामो का स्वरूप (इतिहास एवं वर्तमान संदर्भ में)–किसलय कुमार शुक्ल 384
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार विक्रमशिला : एक संक्षिप्त अवलोकन–राहुल कुमार झा 386
रमेशचन्द्र शाह की कहानियों में समाज के पारम्परिक मूल्यों की प्रासंगिकता–कृपा शंकर 389
कमजोर होती कांग्रेस–अजय कुमार; अरबिंद कुमार 394
जयशंकर प्रसाद के आधुनिकता और दृष्टि निर्माण में नवजागरण की प्रासंगिकता–अखिलेश यादव 397
मौर्य काल में विभिन्न आक्रमणों के ऐतिहासिक प्रभाव का अनुशीलन–शारदा प्रसाद सिंह 400
चम्पूकाव्यस्य परिभाषा रम्यत्वं महत्वम्–दीपक कुमार महतो 402
विभिन्न स्कूल वातावरण में बच्चों में भाषायी अधिग्रहण का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–ज्योतिमा पाण्डेय 407
नामघर: असमिया जाति की एकता व समता का प्रतीक–बिद्या दास 411
राष्ट्रीय एकता के लिए अनुवाद साहित्य का महत्व–डॉ० (श्रीमती) रेखा दुबे; श्रीमती अलका यादव 414
उत्तरी बिहार में कौशल विकास: दृष्टि और रणनीति–आलोक कुमार 417
विद्यालय शिक्षा में विद्यार्थियों की विज्ञान अभिरुचि विकसित करने की नव-प्रवृत्तियां–डॉ० महेश्वर गंगाधर कत्तलावे 419
गांधी जी : एक दर्शन (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)–डॉ० सोनी यादव 423
'जूठन' - दलित जीवन का महाकाव्य–दिलना के 427

राजस्थानी समकालीन चित्रकार रामेश्वर सिंह का कला संसार–डॉ० इन्दु जोशी; कमल किशोर कश्यप 429
समकालीन ख़ौफ़ की सजीव अभिव्यक्ति : 'खुद पर निगरानी का वक़्त'–डॉ० नवनाथ शिंदे 433
मुगल शासकों के अधीन चीन, नेपाल, भूटान, बर्मा, श्रीलंका तथा अफगानिस्तान के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध
–प्रो० (डॉ०) रामानन्द राम 438
सूचना क्रांति और बाजारवाद से बदल गई संसदीय पत्रकारिता–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 442
शासन का नवीन स्वरूप : ई-शासन और सुशासन–डॉ० अशोक कुमार 446
आचार्य गौडपाद की द्वन्द्व-न्यायात्मक तर्कणा-पद्धति–डॉ० सुमित कुमार 450
याज्ञवल्क्य-गार्गी-संवाद का दार्शनिक पक्ष–अभिलाशा कुमारी 453
लेखांकन अनुपात की परिकल्पना तथा वाणिज्य–रंजीत कुमार तिवारी 456
जयपुर के पर्यटन विकास एवं संरक्षण का भौगोलिक अध्ययन–शोभा शर्मा 458
हरियाणा के गुरुग्राम ज़िले में लैंगिक असमानता एवं खांप पंचायतों की भूमिका–इन्दु 464
सत्याग्रह का गांधीवादी परिप्रेक्ष्य और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता–डॉ० आशुतोष पांडेय 469
कश्मीर विलय के प्रश्न का कश्मीर समस्या में रुपान्तरण : एक पुनर्दृष्टि–अनुतोष कुमार 472
रामधारी सिंह दिनकर के कथा साहित्य में जीवन मूल्यों का महत्व–प्रदीप कुमार गुप्ता 476
समकालीन समय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की भूमिका–डॉ. अश्वनी चौधरी 479
समकालीन स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श: मन्नू भण्डारी और प्रभा खेतान के विशेष संदर्भ में–रजनी जोशी 482
आदिवासियों के आर्थिक शोषण की समस्या और हिन्दी उपन्यास–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 484
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक व राजभाषा हिंदी : नीति एवं प्रयोग–आरती शर्मा 487
तत्वों के आधार पर उपन्यास 'पुनर्नवा' का तात्विक विश्लेषण–डॉ. एस. प्रीति 495
अनुभव से अर्जित भावभूमि के कवि : संतोस श्रेयांस–डॉ० एस० रजिया बेगम 503
बिलासपुर जिले का ऐतिहासिक अध्ययन (बिलासपुर रेलवे जोन आंदोलन के विशेष संदर्भ में)
–श्रीमती हंसा तिवारी; डॉ. अंजू तिवारी 505
नव सहस्राब्दि में हिंदी तथा राजभाषा के रूप में उसकी स्वीकृति–हेमंत कुमार यादव 508
गुरु नानक साहिब जी का जीवन-वित्तांत: कवि वीर सिंह बल रचित ग्रंथ 'गुरकीरत प्रकाश' के विशेष संदर्भ में–गुरमिंदर सिंह 511
दलित आंदोलन: राजनीतिक और सामाजिक संदर्भ में गांधी और अम्बेडकर का दृष्टिकोण–काजल 516
अलवर ज़िले में ग्रामीण विकास योजनाओं का अध्ययन–प्रदीप कुमार; डॉ० अनीता माथुर 518
राजस्थान के बाड़मेर जिले में ग्रामीण मानव अधिवासों का वितरण–जसराज 522
शानी के उपन्यासों में नारी चेतना–सोनिका कौशल 527
लोहिया और आर्थिक दर्शन–डॉ० मोहित कुमार लाल 529
कर्ण सिंह 'कर्ण' की काव्य शैली और काव्य सौन्दर्य–डॉ० जे० आत्माराम 532
दलित उत्पीडन का दस्तावेज–डॉ० रतिका पंचारपोयिल कोट्टायी 536
वर्तमान समय में आपदा चुनौतियों के प्रबंधन में समाजकार्य क्षेत्र की प्रासंगिकता–डॉ० शिवसिंह बघेल;
डॉ० सुशील कुमार पाण्डेय 538
सामाजिक न्याय एवं वाल्मीकि जाति : हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 541
स्वामी महावीर के शिक्षाओं की वर्तमान में प्रासंगिता–प्रो० रश्मि मेहरोत्रा; ऊषा यादव 546
हिन्दी उपन्यास की सुदीर्घ परम्परा और स्त्री लेखिकाएँ–डॉ० सुरेन्द्र सिंह; डॉ० यदुवीर सिंह खिरवार 549

'मृदुला गर्ग की कहानियों में समकालीन नारी' ''समकालीन कहानी का अस्तित्व''–मंजू कुमारी 552
बहुजन उपन्यास में बदलता परिवेश–डॉ० राजेंद्र घोडे 554
अनामिका : व्यक्तित्व और कृतित्व–स्वर्णिम शिप्रा 556
नेपाल में चीन के बढ़ते कदम: भारत के परिपेक्ष्य में–आशुतोष कुमार 559
मनुस्मृति के परिप्रेक्ष्य में नारी विमर्श–डॉ० ईशरत सुल्तान 563
हिन्दी कथा साहित्य में पूंजीवादी व्यवस्था एवं पृष्ठभूमि–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 566
मार्गदर्शक तुलसीदास–रघुनन्दन हजाम 580
भारत में नव-उदारवादी आर्थिक नीतियों का उद्भव एवं विकास–डॉ० राहुल देव 583
संत सुंदरदास और उनका 'सुन्दरविलास'–वीरेश कुमार 588
आचार्य राम चंद्र शुक्ल का हिंदी में विज्ञान सम्बन्धी चिंतन में योगदान (विश्व प्रपंच की भूमिका के सन्दर्भ में)
–सुजीत कुमार त्रिपाठी 'पुरकैफ' 590
बिहार में राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक महत्व के कारण पर्यटन स्थलों का विकास–मनु कुमार; डॉ० राधेश्याम सिंह 593
वैश्विक एकता और अखंडता की अभिलाशी प्रवासी कविताएं (सुरेशचन्द्र शुक्ल के 'गंगा से ग्लोमा तक' का संदर्भ)
–प्रो० (डॉ.) सुधा जितेन्द्र; रमनदीप कौर 597
असम में कोरोना महामारी : साहित्य और सोशल मीडिया–मिजानुर हुसैन मण्डल 603
जम्मू कश्मीर के पुराणों का महात्म्य–मीना कुमारी 606
रहस्यवादी कवि नुन्द ऋषि के श्रुकों का भाषावैज्ञानिक परिचय–परवेजा अखतर 611
सामाजिक अनुसंधान तथा तकनीकी विकास–डॉ० अनुराग कुमार पाण्डेय 615
दक्षिण एशिया क्षेत्र में ड्रग्स और छोटे हथियारों की तस्करी–मिथिलेश; डॉ० शकील हुसैन 619
मौर्य काल से वर्तमान काल तक यक्ष पूजा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रो० देवेन्द्र कुमार गुप्ता; अवधेश कुमार 623
बूंदी जिले के बरड़ क्षेत्र में खनन उद्योग का आर्थिक-सामाजिक पर्यावरण पर प्रभाव–जुगराज मीना 626
गोलमेज सम्मेलन : दलित सामाजिक समस्या एंव राजनीतिक अधिकारों का एक अध्ययन–सुरेन्द्र 631
भारत छोड़ो आंदोलन में छत्तीसगढ़ के सतनामी समाज की भूमिका–श्रीमती अनिता बरगाह; डॉ० राजीव शर्मा 634
हरियाणा के सिरसा जिला में भूमि किराया अधिनियम एवं कृषि परिवर्तन (1803-1900)–सुरेन्द्र सिंह 638
शाही नौसैनिक विद्रोह (1946) व उच्चवर्गीय भारतीय नेताओं का रवैया–मोहन लाल 642
भारत -रूस संबध : सामरिक संबंधो का 21 वीं शताब्दी के संदर्भ में एक अध्ययन–डॉ० रणबीर गुलिया; अमित कुमार 646
संपोशणीयता की दृष्टि का भारतीय आधुनिक दृष्य कला में प्रयोग: एक विवेचन–अर्जुन कुमार सिंह; अमित कुमार दास 650
भारत के मुकाबले चीन का नेपाल में बढ़ता प्रभाव : एक अध्ययन–सत्येन्द्र कुमार 657
महिला सशक्तिकरण में लोकनीति का योगदान–सीमा 660
पर्यावरण-संरक्षणम्–डॉ० मधु बाला मीना 663
अलवर मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र का विकास एवं सम्भावनाएँ–प्रतिभा बैरवा 667
भारत में मेक इन इण्डिया की अवधारणा और आर्थिक विकास का सन्दर्भ–प्रोफेसर (डॉ०) संजय कुमार झा 672
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नये दिशा निर्देश पी.एच.डी. शाोध उपाधि के सन्दर्भ में–डॉ० संजीत कुमार साहू;
डॉ० राकेश कुमार डेविड; डॉ० शोभना झा 676
राष्ट्रीय आन्दोलन में सुभाष चन्द्र बोस की भूमिका–संतोष कुमार शर्मा 680
ब्रिटिश कालीन भारत में कृषक समस्या (चंपारण के विशेष संदर्भ में)–प्रभाव और परिणाम–धीरज कुमार 684
वैश्विक महामारी एवं मानसिक स्वास्थ्य संकट मनोविज्ञान की भूमिका एवं मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेपों की आवश्यकता–डॉ० रश्मि पंत 689

नीमराना में ठोस अपशिष्टों का भौगोलिक अध्ययन–अरविन्द शुक्ला; डॉ० खेमचन्द शर्मा 693

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् (शि.पु. को. रू. सं. के संदर्भ में)–डॉ० गोपेश कुमार तिवारी 698

महिला रोजगार पर शिक्षा का प्रभाव: एक प्राथमिक विश्लेषण–डॉ० अरविन्द कुमार 701

यौगन्धरायण में सांस्कृतिक दर्शन–डॉ० वेद प्रकाश मिश्र; श्रीमति नगीता सोनी 705

भारत में जनसंख्या नियंत्रण नीति : एक सामाजिक-विधिक अध्ययन–रमेश कुमार प्रजापति 709

'हिन्द स्वराज' में वर्णित विचारों का आज के भारत के लिए प्रासंगिकता–राजेश कुमार 714

राजस्थान में राजनीतिक दलों की सहभागिता एवं प्रदर्शन–डॉ० जनक सिंह मीना 717

भारत-मालदीव समकालीन द्विपक्षीय संबंध–विजय शंकर चौधरी 724

स्वतन्त्रता के बाद गोरखपुर में हिंदुत्व का प्रसार और सहायक संस्थाए–प्रमोद कुमार पाण्डेय 728

कांमा तहसील में अवैध खनन एवं पर्यावरण पर प्रभाव–चन्द्र शेखर; डॉ० गायत्री यादव 732

प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता मिशन का ग्रामीणों के उत्थान में योगदान–डॉ० पंकज मिश्र 737

छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना–डॉ० आलोक प्रभात 740

भारतीय लोकतंत्र में सोशल मीडिया का प्रभाव: गैर-हिंदी भाषी राज्यों के विशेष संदर्भ में–डॉ० संजय सिंह बघेल 743

सार्वजनिक वितरण प्रणाली, चुनौतियों और समाधान–जलेंद्र कुमार शर्मा 752

यज्ञानुष्ठान में वेदांगों की उपादेयता–कुमुद कुमार पाण्डेय 759

पहाड़ी अंचल में बसी काँगड़ा चित्र शैली का विकासक्रम–डॉ. निशा गुप्ता 765

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में पाठ्यक्रम व्यवस्था–डॉ० सुनीता 769

श्रीमद्भागवद्गीता में वर्णित नैतिक शिक्षा–डॉ० सरोज कुमार जायसवाल 774

ज्योतिबा फुले के कार्यों में मानवतावादी चिंतन–डॉ० अजय बहादुर सिंह 777

उत्तर आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में अलका सरावगी का उपन्यास 'एक ब्रेक के बाद'–निशा रानी 781

भारत में कोरोना और स्वदेशी संकल्प–डॉ० युवराज कुमार 784

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में नारी (आधुनिकता के विशेष संदर्भ में)–संगीता कुमारी पासी 790

विकास के क्रम में भारतीय समाजशास्त्र–डॉ० दिनेश व्यास; डॉ० गौरव गोठवाल 793

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन–प्रेरणा सेमवाल 798

सभ्य समाज की असभ्य सोच-चीफ की दावत–मीनाक्षी शर्मा 805

मकराना शहर में खनन एवं औद्योगिक गतिविधियों से बढता ध्वनि प्रदूषण: एक चुनौती–निशा चौधरी; डॉ० रश्मि शर्मा 807

वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण–सुनील कुमार 813

वैश्विक महामारी : समावेशी विकासीय परिप्रेक्ष्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन (अनुसूचित जातियों के विशेष संदर्भ में)–डॉ० चन्द्रा चौधरी 818

सार्त्र और मार्क्सवाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन–श्याम रंजन पाण्डेय 823

अश्विनीकुमार : एक कथा–डॉ० नीलम सिंह 826

कोविड-19 और भारतीय शिक्षण प्रणाली में बदलाव-एक अध्ययन–डॉ० राजेश्वर दिनकर रहांगडाले 828

ग्रहण का वैज्ञानिक स्वरूप–डॉ० भगवानदास जोशी 831

राहुल सांकृत्यायन की कहानियों में अभिव्यक्त समाज : एक विश्लेषण–डॉ० कश्मीरी लाल 836

सामाजिक अवमूल्यन में पत्रकारिता की भूमिका–प्रो० (डॉ०) अरुण कुमार भगत; प्रो० अमिताभ श्रीवास्तव 839

सूफी काव्य में सृष्टि का सौंदर्य और प्रेम चित्रण–डॉ० दिलीप कुमार कसबे 843

भारत-पाकिस्तान संबंध एवं आतंकवाद–डॉ० सुरेन्द्र सिंह 846

बुद्धिमता के खोखले अहं में पनपते विमोह का यथार्थ चित्रण : आपका बंटी–डॉ० लवलीन कौर 852
कुमाऊँ मण्डल के पर्वतीय क्षेत्रों में प्रवासी श्रमशक्ति की व्यवसायिक गतिविधियां (एक सामाजिक विश्लेषण)–विजेता पवार 857
आधुनिक दलित साहित्य की चेतना और प्रेमचंद के साहित्य में निहित दलित चेतना : एक तुलनात्मक अध्ययन–प्रांजल कुमार नाथ 861
मिथकीय चेतना : अर्थ, परिभाषा और अवधारणा–सचिन मदन जाधव 865
क्षेत्रीय भू-राजनीति एवं भू-आर्थिक आयाम का सैद्धांतिकीय विश्लेषण–रत्नेश कुमार यादव 869
भरतपुर ज़िले में जल जनित रोगों में मलेरिया का तुलनात्मक अध्ययन–देवेन्द्र कुमार शर्मा 874
समकालीन भारत के संदर्भ में एकात्म मानववाद–मुनमुन 881
रचनात्मक अभिव्यक्ति और जैनी मेहरबान सिंह–डॉ० राम बिनोद रे 885
कोशी अंचल की लोक कथाओं का विश्लेषण–विनय कुमार चौधरी 888
अन्य पिछड़ा वर्ग के सर्वांगीड विकास हेतु किए गए सरकारी प्रयासों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन–मनोज कुमार वर्मा 892
मासिक धर्म से संबंधित समस्याओं का यौगिक चिकित्सा व प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा प्रबंधन–डॉ० राधिका चन्द्राकर;
डॉ० सावित्री साहू; श्री आशीष धार दीवान; सुश्री मालती बाग 895
राजेंद्र यादव का आत्मकथ्यांश 'मुड-मुड़के देखता हूँ...': वैचारिक पक्ष–डॉ० साताप्पा लहू चव्हाण 901
कालिदास के रूपकों में प्रमुख पुरुष-पात्रों की विनियोजना का वैशिष्ट्य–सुस्मिता रानी 904
राही मासूम रज़ा के हिन्दी उपन्यासों में लोकजीवन–ईश्वर चन्द्र 908
भारत छोड़ो आंदोलन एक जन-विद्रोह–लव कुमार 912
संयुक्त प्रान्त में रेलवे के विकास के सामाजिक प्रभाव (1860-1914)–रमेश कुमार 916
कैमूर जिला में सरकारी योजनाओं का महिला साक्षरता पर प्रभाव–रीता कुमारी 920
राष्ट्रीय आंदोलन में सत्य अंहिसा के पुजारी महात्मा गाँधी: एक अध्ययन–डॉ० संजीव 924
सुभाषचन्द्र बोस के राजनीतिक विचारधारा पर महात्मा गाँधी के प्रभाव का ऐतिहासिक अध्ययन–तौकीर आलम 926
राजनीतिक दलों का लोकतांत्रिक व्यवस्था में समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० लवलेश कुमार 930
भारत में हरित क्रांति का एक संक्षिप्त मूल्यांकन–अनूप कुमार सिंह 932
गाँधी : मनुष्य से महात्मा–डॉ० दिग्विजय नाथ चौबे 936
वैश्वीकरण एवं भारत की पर्यावरण नीति: एक अनुशीलन–सुनीता महतो 939
अहिंसा..... एक दृष्टि–डॉ० मोनिका गर्ग; डॉ० हिमानी भाटिया 944
अठारह सौ सत्तावन की क्रांति में दलित महिलाओं की सक्रिय भूमिका- एक ऐतिहासिक अध्ययन–बबली कुमारी 947
स्वतंत्रता संग्राम में मौलाना आजाद की पत्रकारिता की भूमिका : 'अल-हिलाल' के विशेष संदर्भ में–रूखसाना बानो 951
उस्ता कला (16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य)–मरियम बानो 955
दरोगा प्रसाद राय एवं बिहार का नेतृत्त्व–दिवा कान्त किरण 957
आदिवासी बहुल क्षेत्र में उच्च शिक्षा की स्थिति (राजस्थान के डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ जिलों का अध्ययन)–डॉ० मुख्त्यार अली 960
वर्तमान परिवेश में निर्देशन की आवश्यकता–सरोज कंवर राठौड; प्रो० मंजू शर्मा 971
दर्शन शास्त्र के स्तम्भत्रय (ज्ञानयोग तथा ज्ञानोपलब्धि के विशेष सन्दर्भ में)–उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 976
ज़िन्दगी 50-50 : अपूर्णता से पूर्णता की तलाश–डॉ० निशा जम्वाल 981
आर्थिक विकास की गांधीवादी परिकल्पना और लघु कुटीर उद्योग–डॉ० राजेश कुमार 983
स्वच्छंदतावाद का सैद्धान्तिक विवेचन–डॉ० सरिता 985
हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित पूर्वोत्तर का राजनीतिक जीवन–संजीव मण्डल 988

बाल अपराध के निवारण में बाल संप्रेक्षण गृह की भूमिका (बिलासपुर जिले के संदर्भ में)–विकास मरकाम; डॉ० रीना तिवारी 997
कोरबा जिले के आदिवासियों द्वारा विभिन्न लघु-वनोपज के संग्रहण करने एवं विक्रय की प्रक्रिया का अध्ययन
–प्रिंस कुमार मिश्रा; प्रो० प्रभाकर पाण्डेय 1003
ज्योतिष के वैज्ञानिक तत्व की प्रमाणिकता : एक अध्ययन–गणेश प्रसाद तिवारी; प्रो० वेद प्रकाश मिश्र 1008
ग्रामीण स्वास्थ्य: सुविधाएं, समस्याएं एंव चुनौतीयों का एक अध्ययन (ग्राम चिनौरी कांकेर जिले के संदर्भ में)
–मंजरी ग्वाले–डॉ० रीना तिवारी 1014
अनुसूचित जनजातियों में रोजगार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की स्थिति का आंकलन–डॉ० सरला चतुर्वेदी; इम्तियाज खाँन 1039
अनुसूचित क्षेत्रों के विकास में पेसा की भूमिका अलोचनात्मक अध्ययन (नारायणपुर जिले के संदर्भ में)
–डॉ० ऋचा यादव; सुदर्शन कुमार मण्डल 1044
कोरोना ने भारतीय अर्थव्यवस्था को दिया झटका–डॉ० अनामिका तिवारी 1049
पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद में भारत छोड़ो आन्दोलन–डॉ० रितेश्वर नाथ तिवारी 1054
मनोविज्ञान पर दर्शनशास्त्र का प्रभाव–मनीष कांत; शशि शेखर द्विवेदी 1058
महिला सशक्तिकरण: आर्थिक सशक्तिकरण–डॉ० समरेंद्र शर्मा 1062
वेदों में विश्वबंधुत्व की भावना–तरूण कुमार सिंह 1065
विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी का स्वरूप–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 1068
जलवायु परिवर्तन का कृषि पर का प्रभाव–प्रविण कुमार एम. लोणारे 1071
भारतीय राजनीति में महिलाओं की सहभागिता : एक अध्ययन–प्रा० एच० पी० पारधी 1074
महर्षि दयानन्द सरस्वती और दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन में समरूपता का अध्ययन–डॉ० संजय कुमार; डॉ० प्रमोद कुमार 1076
महिला सशक्तीकरण में उच्च शिक्षा का योगदान–श्वेता पांडे 1084
वर्तमान सामाजिक गतिशीलता में व्यक्ति तथा समाज के अंतरसंबंधों का एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० विधान चन्द्र भारती 1090
कन्या भ्रूण हत्या : भारत की एक गम्भीर समस्या–भूपेन्द्र प्रताप सिंह 1095
निजी विद्यालयों पर वैश्विक महामारी के (कोविड-19) प्रभाव का अध्ययन: सरदारपुर तहसील के विशेष सन्द्रर्भ में–डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 1103
प्राचीन भारतीय समाज में प्रचलित विवाह पद्धति एवं वैवाहिक विधि-विधानों का एक ऐतिहासिक अध्ययन–सम्पत्ति; प्रो० डी०पी० सकलानी 1110
अमरकंटक परिक्षेत्र के विकास में कृषि का योगदान : एक ऐतिहासिक अध्ययन–निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल 1115
अल्पसंख्यक समुदाय का मतदान व्यवहार वर्तमान परिप्रेक्ष्य में–रेणु सिंग; डॉ० संगीता घई; डॉ० अजय चंद्राकर 1122
कश्मीरी आदि कवयित्री ललद्यद और उनका रहस्यवाद–दीपिका शर्मा 1126
पर्यावरण संरक्षण की वैदिक दृष्टि–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 1129
भारतीय नागरिकों के मूल अधिकार, निदेशक तत्त्व और मूल कर्तव्य–प्रतिभा सिंह 1133
गाजीपुर जनपद में प्राकृतिक आपदाओं का सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर प्रभाव–कौसर नाजमी 1136
छत्तीसगढ़ के लोक-जीवन में राम–डॉ० राजेश दुबे; डॉ० (श्रीमती) शैल शर्मा; ज्योतिबाला साहू 1139
भारतेंदुयुगीन साहित्य पर भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रभाव–डॉ० अपराजिता जॉय नंदी 1142
उपभोक्तावाद, आर्थिक विकास से उत्पन्न होने वाली एक सामाजिक समस्या–डॉ० जयराम बैरवा 1145
उपसंहार : अंत ही मानवता का आरंभ–प्रीति पाण्डेय 1150
हिंदी के आदिवासी केंद्रित उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन–डॉ० मालोजी अर्जुन जगताप 1155
"ग्रामीण महिलाओं की पंचायती राज में भूमिका"–डॉ० संजय बुदेला; किरण कुमारी 1158
छात्रों की अध्ययन संबंधी आदतों पर पारिवारिक व सामाजिक वातावरण का प्रभाव–डॉ० मंजू शर्मा; मनु सिंह 1161
"एक राष्ट्र, एक चुनाव": विश्लेषणात्मक अध्ययन–खुशबू गोस्वामी; प्राफेसर (डॉ०) सपना गहलोत 1166

बालिका शिक्षा के विकास में आवासीय शिक्षण शिविरों की भूमिका–प्रो० (डॉ०) मंजू शर्मा; टीना चौधरी 1173
भारत में थर्ड जेंडर स्थिति : बेहतर और बदत्तर?–दिव्या 1179
स्वच्छता पर गाँधीवादी दृष्टिकोण–गुलशन कुमार 1183
मानवाधिकार एवं महिलाऐं : राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में–समिधा सिंह 1186
डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के राजनीतिक विचारों का परीक्षण–फरीद आलम 1189
समकालीनता के परिप्रेक्ष्य में अनु मेहता की कविताएँ–डॉ० अरविन्द कुमार यादव 1192
स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की सहभागिता–डॉ० संध्या जायसवाल; विनीता गुप्ता 1197
भारतीय नयी शिक्षा नीति (2020) में गांधी–देवेन्द्र कुमार 1203
लैंगिक असमानता की समस्या और मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ–डॉ० गुलाम फरीद साबरी 1205
द्वारिका प्रसाद तिवारी "विप्र" के काव्य में गांधीवाद का प्रभाव–डॉ० गौकरण प्रसाद जायसवाल 1208
वर्तमान व्यावसायिक परिदृष्य में ई-कामर्स की उपयोगिता–डॉ० दिलीप कुमार गुप्ता 1213
असहयोग आंदोलन में डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की भूमिका–मो० फिरोज अंसारी 1218
भारतीय संस्कृति एवं एकात्म अर्थ चिंतन–प्रो० शिवदयाल सिंह; धीरज कुमार पारीक 1220
विद्यार्थियों के लक्ष्य निर्धारण में आकांक्षा स्तर की उपादेयता–मधु गुप्ता; डॉ० रेखा शुक्ला 1223
छिन्नमस्ता: अस्तित्व एवं अस्मिता की तलाश–नम्रता; डॉ० प्रभात रंजन 1228
भूमण्डलीकरण के दौर में गाँव : 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास के संदर्भ में–डॉ० रम्या बालन० के 1231
शेखावाटी के पर्यटक स्थल एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० विनोद कुमार सैनी 1235
हरियाणा में प्राथमिक कार्यों में लैंगिक विषमता: एक प्रादेशिक विश्लेषण–डॉ० विजय प्रकाश 1239
इतिहास के दृष्टिकोण से साहित्य, मनोविज्ञान और वाणिज्य का अवलोकन–डॉ० स्नेहलता सिंह 1245
भूमंडलीकरण और नई कहानीकार–अनवर खान; डॉ० बी०एन० जागृत 1248
गांधीवादी राज्य : भारत में एक विकल्प–सुभाष चन्द उपाध्याय 1250
नई शिक्षा नीति 2020 और दिव्यागंता–डॉ० रितेश सोलंकी 1254
वर्तमान संदर्भ में बच्चे के पालन-पोषण में माता-पिता की भूमिका : एक सामान्य विश्लेषण–संजीव कुमार 1261
झुग्गी झोपड़ियों में शैक्षिक समस्याएं एवं चुनौतियाँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० मानस उपाध्याय 1264
जैनेन्द्र के उपन्यासों में जीवन दर्शन एवं उसका महत्व–आशीष यादव 1269
मरिआई : महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० अतुल अर्जुन ओहाल 1271
हिन्दी साहित्य में मीडिया का बदलता स्वरूप–मीनाक्षी सिंह 1273
रहीम और तुलसी रचित नीति के दोहों की प्रासंगिकता–डॉ० निर्मल चक्रधर 1276
भारतीय जीवन – मूल्य : विदेशियों की दृष्टि–डॉ० सुप्रिया पी० 1280
यात्रा-वृत्तान्त में पाकिस्तान का साक्ष्य (चयनित यात्रा-वृत्तान्तों के संदर्भ में)–स्मृतिरेखा नायक 1282
विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी का स्वरूप–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 1287
मोहन राकेश के नाटकों के नायक–प्रा० डॉ० विजया जगन्नाथ पिंजारी शिंदे 1290
विशिष्ट भौतिक विकास और व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए विशेष योजनाओं में छात्रों के लिए खेल–डॉ० मंजू शर्मा; आरती गुप्ता 1294
भारतीय खेल प्रबन्ध - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० अमित कुमार सिंह 1300
अभिनय प्रस्तुतिकरण में सात्विक भावों का विश्लेषण–डॉ० आदीश कुमार वर्मा 1303
नरेंद्र वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० सविता मिश्रा; चंचल बाला 1305

राजस्थान में पर्यटन विकास : उदयपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में–भूमिका मेघवाल; डॉ० वन्दना वर्मा 1308
भारत में ब्रिटिश कालीन न्याय व्यवस्था : ऐतिहासिक परिचय–सौरभ कुमार जैन 1314
विकास की वर्तमान अवधारणा और गांधीवाद–डॉ० पिंकी पुनिया 1317
सीकर जिले में भूमिगत जल स्तर : श्रीमाधोपुर तहसील का एक विश्लेषण–दिलभाग; डॉ० मोनिका रोत 1322
राहुल सांकृत्यायन के यात्रा-साहित्य में ग्रामीण लोकजीवन एवं सांस्कृतिक परिदृश्य–निशा चौहान 1325
गांधीवादी दृष्टिकोण में कल्याणकारी राज्य का सिद्धांत–रेखा सक्सेना; ऋतेश भारद्वाज 1329
इतिहास भर में अफ्रीका–प्रशांत कुमार वशिष्ठ 1335
बांग्लादेश में बदलती दलीय प्रणाली की रूपरेखा–वीना कुकरेजा 1339
भारतीय राष्ट्रवादी विचार की विभिन्न धाराएँ–डॉ० प्रशांत देशपांडे 1344
भारत में कारावास की नैतिकता: एक अध्ययन–डॉ० रेखा ओझा 1347
भारत में बाजारीकरण की उत्पत्ति व आहत मुद्राओं का बाजार मूल्य–डॉ० प्रीति सिंह 1350
जैन धर्म और उसकी तत्त्वमीमांसा–डॉ० सरोज राम 1352
संस्कृत भाषा का इतिहास और पुनरुत्थान–डॉ० योगिता मकवाना 1354
भूगोल का सामाजिक विज्ञानों से संबंध और प्रयुक्त अध्ययन तकनीकें–डॉ० राजेंद्र प्रसाद 1356
'जाति विषमता एक अभिशाप' डॉ. लाल के नाटकों के विशेष संदर्भ में....–डॉ० नानासाहेब जावले 1359
महाभारत के राक्षसों की कथाएँ–प्रवीण मिश्रा; डॉ० वेदप्रकाश मिश्र; डॉ० रेनू शुक्ला 1362
राजस्थान में ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम : एक अध्ययन–डॉ० बलबीर सिंह 1366
सरकारी योजनाओं में महिलाओं का सशक्त योगदान–श्रीमती गायत्री तिवारी; डॉ० अंजू तिवारी 1368
शेखावाटी के पर्यटक स्थल एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० विनोद कुमार सैनी 1371
संस्कृत-सृजन : अपेक्षा एवं उपलब्धि–ऊषा नागर 1375
भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा–डॉ० रूपेश कुमार चौहान 1379
मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 1383
'तोपो गोनअ' नामक गालो लोक गाथा में वर्णित भाई-बहन संबंध–जुमनू कामदाक 1387
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार में पिछड़ी जातियों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना का विकास–राजेन्द्र कुमार 1392
नेहरू के समाजवाद एवं अंतर्राष्ट्रीयवाद की अवधारणा–मो० जाहिद शरीफ 1395
कृष्ण लीलागान की मनौवैज्ञानिक पृष्ठभूमि–डॉ० मृत्युंजय सिंह 1399
जनसंख्या वृद्धि की समस्या- कारण एवं निदान–नेहा रावत 1404
रायका समुदाय की मौसमी प्रवास के दौरान समस्याएँ : सिरोही जिले का एक भौगोलिक अध्ययन
–प्रो० पी० आर० व्यास; ललित कुमार मोबारसा 1410
राजस्थान एवं गुजरात के जनजाति समुदाय के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, समायोजन एवं आकांक्षा का अध्ययन
–संजय कुमार मीना 1415
मादक द्रव्य व्यसन एवं सद्वृत–अंकित तिवारी; प्रो० चंद्र शेखर पांडेय 1424
व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के बीच संघर्ष का समाधान : प्रस्तावना में है निदान–प्रो० पवन कुमार 1427
भोटिया जनजाति का ऋतु प्रवास तहसील मुनस्यारी के सन्दर्भ में–डी० एस० परिहार, दीपक 1430
कश्मीर समस्या की उत्पत्ति एवं समाधान–जितेन्द्र भारती 1440
भारत में संघवाद एंव राज्यों की स्वायत्तता: एक अध्ययन–आशीष कुमार सिंह 1447

छायावाद और पण्डित मुकुटधर पाण्डेय के साहित्य की उपयोगिता–डॉ० जयपाल सिंह प्रजापति; श्री बीरू लाल बरगाह 1450
संस्थागत मूल्य और सामाजिक उत्तरदायित्व–डॉ० पूनम भूषण 1455
ब्लेंडेड लर्निंग-एक नवाचार–डॉ० प्रगति भटनागर; डॉ० मनीष भटनागर 1458
पुनरूत्थान का खतरा और साहित्य–अभिषेक चारण 1464
महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों के नये स्वरूप–श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ० श्रीमती रीना तिवारी 1468
राष्ट्रीय चेतना और हिंदी साहित्य–शुचिस्मिता मिश्रा 1472
अमित अम्बालाल के चित्रों में 'यू टर्न'–डॉ० शाहिद परवेज 1474
डॉ० भीमराव अम्बेडकर का शैक्षिक चिन्तन–सरिता; प्रो० बी०एल० जैन 1478
तुलसीदास के साहित्य में आदर्श परिवार की संकल्पना–रामयश पाल 1481
बिहार में च्डम्ळच् योजना : एक अध्ययन–राकेश कुमार; प्रो० हिमांशु शेखर 1484
आत्मनिर्भरता एवं नैतिक मूल्य–डॉ० पूजा कुमारी 1489
वैश्वीकरण और ग्रामीण भारत पर इसका प्रभाव–डॉ० राज कुमार प्रसाद 1492
प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री चेतना, स्त्री विमर्श–प्रिया सिंह 1495
आत्म निर्भर भारत : प्राचीन काल से आधुनिक काल तक COVID-19 के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० भारत भूषण 1498
समाजोत्थान में हरियाणवी सन्त-काव्य का योगदान–शीला देवी 1501
प्रधानमंत्री जनधन योजना एक तथ्यात्मक अध्ययन–(प्रोफेसर) डॉ० हिमांशु शेखर; संजीव कुमार 1504
स्वच्छ भारत अभियान : पर्यावरण संरक्षण के लिए सकारात्मक कदम–डॉ० विकास शर्मा 1509
पहाड़ की स्त्रियों का पहाड़ भर दु:ख–शालिनी देवी 1513
राजनीतिक सहभागिता के विभिन्न स्वरूप का अध्ययन–कृष्णा बैठा 1517
'पाश': क्रांति का अग्रदूत–इन्दरप्रीत कौर 1519
कोरोना काल में विद्यार्थियों पर ई-लर्निंग का प्रभाव–डॉ० आभा रानी 1522
बेहतर भविष्य के लिये ठोस अपशिष्ट निपटान के नवीन आयम–मोहिनी सरन एवं डॉ. सलाहउद्दीन मोहम्मद 1525
उच्च शिक्षा हेतु अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति योजनाओं के प्रति मुस्लिम महिलाओं की जागरूकता का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन –डॉ० सौम्या शंकर; नसीम अख्तर 1531
समकालीन भारतीय चित्रकला में चित्रकार एस०एच० रज़ा की कलाकृतियों में रंगों का प्रतीकात्मक अध्ययन–निशा माहौर 1534
शिवाद्वयवादी नेत्रतन्त्र में सृष्टिप्रक्रिया एवं साधना के संदर्भ में शिवतत्त्व विमर्श–डॉ० प्रदीप 1538
मॉरीशस में श्रीराम कथा एवं भारतीय संस्कृति–उमेश कुमार सिंह 1542
बच्चों का पालन पोषण और अभिभावक–डॉ० अलका 1546
बच्चों के विकास में प्री-प्राइमरी शिक्षा और किंडरगार्टन की भूमिका–डॉ० शंकर जी 1549
बीड़ झुंझुनू कंजर्वेशन रिजर्व का पारिस्थितिकीय अध्ययन–डॉ० मन्जू चौधरी 1551
छत्तीसगढ़ के श्रमिको मे कोविड माहमारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में) –संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी 1555
जीवनसाथी चयन में कामकाजी महिलाओं की भूमिका का सामाजिक विश्लेषण–डॉ० अर्चना सिंह; शैलजा वर्मा 1560
चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों में प्रेम संवेदना–मोहन पुरी 1564
क्षेत्रीय विकास, विशमताएँ व पलायन, मुद्दे एवं चुनौतियां-उत्तराखण्ड के तीन मैदानी जनपदों का एक विश्लेषण–सुनील सिंह 1568
वर्तमान भारतीय विधिक शिक्षा के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ–अरविन्द कुमार गुप्ता। 1576
भारतीय राजनीति के मुखौटे को बेनकाब करती धूमिल की कवितायें–डॉ० शंकर शर्मा 1580

## दृष्टिकोण


गोंड राजाओं के शासन का प्रतीक : देवगढ़ का किला–प्रो० बिंदिया महोबिया 1584
प्रवासी हिंदी कथा साहित्य में स्त्री सार्वभौमिकता–नीलम सागर 1589
हिमाचल के कुल्लू जनपद की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि–हेम राज 1592
हिंदी के प्रमुख दलित आत्मकथाओं का परिदृश्य–सिद्धलिंग गंगु; डॉ० सविता तिवारी 1594
गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में चित्रित पारिवारिक सद्भाव–डॉ० बिजेंद्र कुमार 1597
सूर्यबाला जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–प्रकाश मानू जाधव; डॉ० सविता तिवारी 1602
मुगल काल में फारसी साहित्य-संस्कृति–डॉ० मो० मोतिउर रहमान खान 1606
डाक टिकट पर पानी–विनय पटेल 1610
छत्तीसगढ़ में ई-गवर्नेस से प्रशासनिक विकास पर प्रभाव व चुनौतियां (गरियाबंद जिले के विशेष संदर्भ में)
–अदिति तलवरे; डॉ० प्रमोद यादव 1614
आदर्श मित्र और मित्रता के सन्दर्भ में रहीम–प्रो० मन्जुनाथ एन० अंविग 1617
हिन्दी कविता में यायावर 'श्री गुरु नानक देव'–डॉ० सुनीता शर्मा 1621
जनपद अल्मोड़ा में पर्यटन का विकास, सम्भावनाएं तथा समस्याएं, कुमाऊँ हिमालय, उत्तराखण्ड–महेन्द्र सिंह; डॉ० दीपक 1627
लोक साहित्य का स्वरूप एवं वर्गीकरण : एक विश्लेषण–ममता कुमारी 1637
भूमि उपयोग का मानव जीवन पर प्रभाव : - उदयपुर जिले का एक भौगोलिक अध्ययन–कैलाश चन्द्र मीणा 1642
भारतीय इतिहास में व्यापारिक संधर्ष विशेष संदर्भ :- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापार विस्तार–डॉ० (श्रीमती) अंजू कुमारी 1645
भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 1650
भारत-मध्य एशिया गणराज्य: चुनौतियाँ और संभावनाएँ–गुरदीप सिंह 1655
ब्रिटिश प्रशासन और भारतीय राष्ट्रवाद : एक अध्ययन–रितेश कुमार 1659
छात्राध्यापकों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन–प्रज्ञा सिंह 1661
भारत में कृषि के विकास में कृषि प्रबंधन की भूमिका–प्रियंका 1666
सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में व्यक्त दलित स्त्री चेतना–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 1669
राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: सक्षमता का सबल साधन–डॉ० अनिल कुमार पाण्डेय 1672
उत्तराखण्ड में सड़क-पुल आन्दोलन में गढ़वाली पत्र की भूमिका–डॉ. मनोज सिंह बाफिला 1675
मान्यवर कांशीराम की विचारधारा का दलित कविता पर प्रभाव–मुकेश कुमार भारतीय 1680
गाँधी दर्शन में ब्रह्मचर्य की अवधारणा–दीक्षा 1686
भारतीय परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक शिक्षा के अधिकार की ऐतिहासिक समीक्षा–डॉ० शिखा चतुर्वेदी 1688
'हंस' सम्पादकीय दृष्टि और हाशिए का समाज–ममता यादव; डॉ० यशवन्त वीरोदय 1691
औपनिषदिक साहित्य में कर्म चिन्तन–डॉ० श्रीमती अर्चना 1694
कार्यस्थल पर कामकाजी महिलाओं की स्थिति का अध्ययन–प्रियंका दीक्षित; डॉ० राकेश प्रताप सिंह 1697
दलित साहित्य और प्रेमचन्द–विजय प्रकाश 1700
नव-उपनिवेशवाद एवं सांस्कृतिक विमर्श (1990 के बाद)–योगेन्द्र कुमार सिंह 1702
भारत में उच्च शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी–डॉ. श्वेता रस्तोगी 1706
पंथनिरपेक्षता की भारतीय अवधारणा–डॉ० दीपशिखा चतुर्वेदी 1709
पर्यावरणीय संचेतना एवं नैतिक-मूल्यों का आव्यूहन–डॉ० माया शंकर 1712
परम्परा एक दृष्टि: रामविलास शर्मा–डॉ० शिवाजी 1716
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवम् छात्राओं का शिक्षा में नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन
–सरस्वती देवी; डॉ० बिहारी सिंह 1719

क्रांति के अमर गायक माखनलाल चतुर्वेदी का हिन्दी साहित्य में योगदान–डॉ० आर०पी० वर्मा 1722
विघटित जीवन मूल्य और साहित्य–डॉ० साधना 1725
औपनिवेशिक भारत में सिक्के तथा मुद्रा व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन–डॉ० आशा रानी 1728
प्रगतिवादी चेतना के कवि निराला–डॉ० रश्मि कुमारी 1732
हिंदी कहानियों में स्त्री अधिकारों की चुनौतियां और जाति का सवाल–पूनम गुप्ता 1735
प्राचीन भारत में सामाजिक परिवर्तन के तत्व: वर्ण व्यवस्था का विशेष संदर्भ–डॉ० राधेश्याम सिंह 1738
समावेशी शिक्षा व्यबस्था आवश्यकता एवं चुनौतियाँ : एक अध्ययन–रत्नेश कुमार जैन; डॉ० कल्पना जैन 1742
बाजारवाद और भूमंडलीकरण का अन्तर्सम्बन्ध–सरिता भारती 1748
चित्तौड़गढ़ नगर के ग्रामीण-नगरीय उपान्त का भौगोलिक परिदृश्य–प्रो० पी० आर० व्यास; मनोज जाँगिड़ 1751
आधुनिकता की कसौटी में वैदिक नैतिकता–डॉ० चारू मिश्रा 1756
व्याकरण शास्त्र का दार्शनिक पक्ष-वाक्यपदीय की दृष्टि में–डॉ० जयन्ती सिंह 1759
हमीरपुर जनपद में सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं हिन्दी पत्रकारिता–डॉ० शोभा सक्सेना 1762
नगरीयकरण और बाल-अपराध में सम्बन्ध : एक विश्लेषण–डॉ० विवेक कुमार सिंह; कान्ती पाण्डेय 1765
रायपुर जिले के विद्यार्थियों में सूचना संचार प्रौद्योगिकी का उनके आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –खुशबू दीवान; डॉ० संजीत कुमार साहू 1769
मध्यकालीन नाटक-कला–डॉ० रियाजुल हसन 1773
बौद्ध धर्म में पर्यावरण और उसके संरक्षण की वर्तमान प्रासंगिकता–दिनेश कुमार 1775
भारत में महिला शिक्षा: दशा एवं दिशा–श्रीमती बबीता खाती 1778
नीर-क्षीर विवेकी रचना–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 1782
महिला कथाकार मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी जीवन–डॉ० सुधा 1784
भारत में वृद्ध जनसमूह की समस्या: एक विश्लेषण–डॉ0 अरविन्द कुमार वर्मा 1787
समकालीन हिन्दी कविताओं में अभिव्यक्त 'स्त्री इच्छाओं की दमन' प्रवृत्ति–डॉ० प्रभुसेन 1790
घरेलू हिंसा की रोकथाम के उपाय एवं महिला कल्याण कार्यक्रम–सुबोध कुमार 1793
ग्रामीण विकास में महिलाओं की सहभागिता–डॉ० किरन सिंह 1797
अज्ञेय के उपन्यास में पात्र चरित्रांकन: एक दृष्टि–डॉ० मनोज कुमार पाण्डेय 1800
झीनी-झीनी बीनी चदरिया: बुनकरों के शोषण एवं संघर्ष का जीवन्त दस्तावेज–डॉ० नीलम तिवारी 1803
मानवतावाद में शेख मुहम्मद अब्दुह का योगदान: एक अध्ययन–नुरुल हसन 1806
कोविड-19: पर्यावरण के लिये संजीवनी–डॉ० अंजू सिंह 1811
कथाकार शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण स्त्री शोषण की समस्यायें एवं संघर्ष–कृष्ण देव 1813
स्वामी विवेकानंद के सामाजिक व राजनीतिक विचारोंका का अध्ययन–प्रो० डॉ० वाय० एम० साळुंके 1817
पाली एवं सिरोही जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयो में ऑनलाईन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन –कैलाश परिहार; डॉ० दीपक पंचोली 1820
अथर्ववेद में प्रकृति पूजा–डॉ० जेबा खान 1824
कला तथा वाणिज्य के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–राजेश कुमार; डॉ० आसिफ कमाल 1826
कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता का भक्ति योग अध्याय–डॉ० श्वेता मिश्रा 1831
स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन–रामप्रवेश यादव; डॉ० नरेन्द्र कुमार सिंह 1833

## दृष्टिकोण


गुरु तेग बहादुर जी की शहादत यात्रा : (हरियाणा के ऐतिहासिक स्थान)–सुनील 1840

पन्ना जिले की प्रागैतिहासिक शैलचित्र कला–देवीदीन पटेल 1844

छायावाद: भारतीय साहित्यिक चिन्तन धारा का स्वाभाविक विकास–अजय कुमार सिंह 1847

एक एक्टिविस्ट की कविताओं के मायने (सुधा अरोड़ा की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में)–कु० आशा मिश्रा; डॉ० जनार्दन 1851

भोजपुरी लोकनाट्यों में सामाजिक पक्ष–अनुपम यादव 1855

जनजातीय विकास के नवीन आयाम: एक अध्ययन–डॉ० सुधांशु वर्मा 1858

भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली : चुनौतियां और सुझाव–मो० वकार रजा 1861

21वी सदी का परिदृश्य और वृद्ध जीवन–अमिता सिंह; डॉ० परेश कुमार पाण्डेय 1864

अखंड भारत एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय: एक विवेचना–कुलदीप गंगवार 1867

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में दुर्गा भाभी वोहरा की भूमिका–प्रदीप सिंह 1871

मालती जोशी व मन्नू भंडारी के द्वारा चित्रित नारी की दशा–डॉ० नम्रता जैन 1873

उपनिवेशवाद के दौर में भारतीय कृषि का रूपान्तरण एवं उसके सामाजिक परिणाम–डॉ० राम सुन्दर यादव 1875

अज्ञेय के काव्य में दलित-चेतना–रचना तनवर 1878

कानपुर में धर्म सुधार आन्दोलन की प्रतिध्वनि–डॉ० प्रीती त्रिवेदी 1881

महिला सशक्तिकरण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण–शाजिया सुल्तान 1884

भारत में मतदान व्यवहार–डॉ० विनीता गुप्ता 1887

बुन्देलखण्ड एवं बुन्देला: एक संक्षिप्त अध्ययन–रविन्द्र प्रताप सिंह 1890

आधुनिक संप्रेषण माध्यमों के बीच 'संवदिया' की प्रासंगिकता–डॉ० अमिता यादव 1894

प्राचीन भारत की कुछ प्रमुख क्रीड़ाएँ–डॉ० अनिल कुमार सिंह 1897

बिहार के नक्सल आन्दोलन में दलित महिलाओं की सहभागिता–श्वेता कुमारी 1900

मोदी सरकार II: अंत्योदय, सुरक्षा और राष्ट्र साधना का एक वर्ष–स्वदेश सिंह 1905

मुगल चित्रकला: अकबर काल के चित्र एवं चित्रकारों के सन्दर्भ में–रघु यादव 1908

व्याकरणिक दक्षता के उन्नयन में आगमन-निगमन विधि की प्रभाविता का अध्ययन–डॉ० प्रियंका रावल 1911

नई शिक्षा नीति 2020 का उच्च शिक्षा पर प्रभाव: एक समाजशास्त्री अध्ययन–ओम प्रकाश 1918

लिंगानुपात: फर्रुखाबाद जनपद का जनांकिकीय विश्लेषण–डॉ० प्रभात सिंह 1921

स्वामी विवेकानन्द के मानवतावादी चिंतन व कर्मशीलता की शिक्षक-शिक्षा के नीति-निर्माण में प्रासंगिकता–डॉ० अजय कुमार सिंह 1927

रोजगार सृजन में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० विजय ग्रेवाल; नीलम कुशवाह 1932

वृधावस्था की अवस्था: समस्याए एवं सुरक्षा–डॉ० जया भारती 1936

अर्वाचीन संस्कृत काव्य भाति में भारतम् में राष्ट्रीय भावना–डॉ० मीना गुप्ता 1940

डाकघर द्वारा संचालित सुकन्या समृद्धि खाता योजना में निवेश निष्पादन का अवलोकन–डॉ० विजय ग्रेवाल 1944

हिन्दी उपन्यास साहित्य में दस्तक देता वृद्ध विमर्श–डॉ० निम्मी ए. ए. 1949

ग्रामीण विकास और मनरेगा–डॉ० मिथिलेश पासवान 1951

अनुसूचित जनजाति महिला का प्राथमिक शिक्षा में सहभागिता - धुले (महाराष्ट्र) जनपद एक भौगोलिक विश्लेषण–संजय बी० घोडसे 1956

साहित्य में विचारधारा–डॉ० कुलदीप कौर पाहवा 1959

मधुबनी की ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि–श्वेता 1963

रोमेश चन्द्र दत्त-एक महान् बंगाली साहित्यकार–डॉ० तेजवीर सिंह; अजय यादव 1968

संवैधानिक प्रमुख के रूप में राज्यपाल–निखिल कुमार 1972

दूधनाथ सिंह कृत उपन्यास: 'आखिरी कलाम' में राजनीतिक यथार्थ–डॉ० निकेता; दीक्षित कुमार 1976

# दूधनाथ सिंह कृत उपन्यासः 'आखिरी कलाम' में राजनीतिक यथार्थ

**डॉ० निकेता**

*एसोसिएट प्रोफसर, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर, उ0प्र0*

**दीक्षित कुमार**

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर, उ0प्र0*

## शोध-सार

'इल्यूजन एण्ड रिएलिटी' और 'वोल्गा से गंगा ' जैसी साहित्यक कृतियों की बहुआयामिता निर्विवाद हैं। ऐसा ही एक महाप्रयास 'आखिरी कलाम' में दूध नाथ सिंह ने भी किया है। दूधनाथ सिंह के उपन्यास 'आखिरी कलाम' राजकमल नयी दिल्ली 2003 को पढ़ते समय इतिहास की उक्त आदर्श कृतियों मन-मस्तिष्क में कौंधती रही हैं। अध्ययन से एहसास हुआ कि यह उपन्यास चुनाव के समय में एक सर्जनात्मक हस्तक्षेप है। ऐसे संसदीय चुनाव 2019 में जब बाबरी मस्जिद को लेकर सत्ता पक्ष-विपक्ष दोनों ही इस मुद्दे को अपना चुनावी हथियार बना रही हो तो 'आखिरी कलाम' में राजनैतिक यथार्थ को शोध -पत्र का विषय बनाने का निर्णय लिया गया । उक्त उपन्यास राजनीति के विभिन्न आयामों की यथार्थ अभिव्यक्ति है।

दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य का विकास यथार्थवाद के धरातल पर ही होता है। दूधनाथ सिंह जी कथा-साहित्य के प्रति लगातार चिंतन मनन करते है जिससे उनकी रचना यथार्थ के ठोस स्वरूप को बयाँ करती है। दूधनाथ सिंह तटस्थ एवं प्रतिबद्ध होकर कथा लेखन के माध्यम से कथा-साहित्य को समृद्ध करते रहे है। दूधनाथ सिंह का 'आखिरी कलाम' उपन्यास में मूल भावना सामाजिकता है। उन्होंने बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार ही चित्रण और विश्लेषण किया है। सामाजिक यथार्थ उनके कथा-साहित्य का मूल विषय बना रहा। 'आखिरी कलाम' उपन्यास 2003 में प्रकाशित हुआ यह चार खण्डों में विभाजित है- 1. गृह जंजाल, 2. प्रस्थान पर्व, 3. देव शमशान, 4. पुनश्च। दूधनाथ सिंह का यह उपन्यास राजनैतिक आयामों को संजोये है। राजनैतिक भ्रष्टाचार, राजनैतिक षड़यंत्र, राजनैतिक स्वार्थान्धता, धर्मांधता और सांप्रदायिक विद्वेष की भावना आदि विषय मुख्य रूप से अभिव्यक्त हुए हैं।

''इसमें दो मौते है, दो शवन्यात्राएँ है। बूढे आदमी पहली शव यात्रा का प्रारम्भ करता है। उसकी संगीतमय बुदबुदाहट, उसके निरर्थक लेकिन शाश्वत मूल्य के प्रवचन, यह इस शव-यात्रा का त्रासद संगीत है। --- दूसरा शव यात्रा कारसेवकों की है। हल्लाबोल शोर, धूल और पागलपन और भगवा रंग जो बाबरी मस्जिद की मृत्यु में समाप्त होता है। ''जै श्री राम का शोर क्या एक स्तर पर राम नाम सत्ता है? का शोर नहीं लगता?''[1]

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य 'आखिरी कलाम' उपन्यास की राजनैतिक आलोचना है लेकिन राजनैतिक समालोचना एक बहुआयामी सरोकार है। राजनैतिक सिद्धान्त एवं व्यवहार के अलावा धर्म, दर्शन, साहित्य, विज्ञान इत्यादि भी इसके दायरे में आते है। व्यक्तिगत, मुखरता, अस्पष्टवादिता मनःस्थिति है जिसे 'आपद्धर्म' के रूप में मर्यादित किया जाता है। इसी प्रकार जब कोई छोटी या बडी अन्यायी सत्ता समर्थन चहती हो तो चुप्पी नैतिक, प्रतिरोध है। किन्तु सामान्य स्थितियों में यह गलत-सही जो हो रहा होता है् का मूक समर्थन है वर्तमान लोकतांत्रिक समाजों में व्यक्ति के यौन सम्बन्ध जैसे नितान्त निजी सरोकार के भी राजनीतिक निहितार्थ है। दरअसल, व्यक्ति आत्मसात समाज है और राजनीति सामाजिक महासरोकार। अतः दोनों की अन्योन्यश्रितता एक असंदिग्ध तथ्य है। पूँजी-अंग्रेजी पूंजीवाद की व्याख्या और समालोचना मात्र नहीं है। यह उनकी नैतिक, सामाजिक, दार्शनिक, साहित्यिक समलोचना भी है। इसी प्रकार हिन्दू स्वराज, पश्चिमी पूँजीवाद पर सभ्यागत टिप्पणी है।

उपन्यास के नायक एक प्रतिबद्ध, मुखर एवं विद्वान् मार्क्सवादी है या जनवादी कह दो पर अपनी निजता के साथ। सर्वात्मन, उनका मार्क्सवादी शिष्य है जो कम्युनिस्ट पार्टी का प्रान्तीय स्तर का नेता है और आचार्य जी के प्रति समर्पित है। बिल्लेश्वर किसी की नाजायज सन्तान है जिसे आचार्य जी ने चिथड़ों में फेका पाया था लेकिन परिवार के दमघोंटू वातावरण में भी उन्होनें उसे पोते का स्नेह दिया है। वह कम पढा-लिखा है पर विवेकवान है। मुँहफट और आचार्य जी का मुँहलगा अपरिहार्य सम्बल है। श्कहीं-कहीं वह कबीर की याद दिलाता है तो कहीं किंग लियर के ' द फूल की आचार्य जी अपने असीम ज्ञान और विवेक के बावजूद लियर की जिद्दी आत्मघाती भूमिका में भी दिखते है।''[2]

उपन्यास में गायत्री और स्वामी अचेतानन्द जैसे भी पात्र है जो हिन्दुत्ववादी पक्ष को संभाले हुए है। उपन्यास में जमील मियाँ भी है जो बाबरी मस्जिद घटना की दहशत के दबाव में टूट गया है और अन्ततः अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठा है।

आचार्य जी का इकलौता माधवानन्द अमेरिका में एक श्रेष्ठ ब्राह्मण वैज्ञानिक के रूप में गायत्री-सिंर्डोम से बच पाता है। अयोध्या के पार्टी कार्यकर्ता मिसिर जी है जो जमीनी हकीकतों के इतने दबाव में है कि उनके लिए पार्टी सिद्धान्त का कोई माने मतलब नहीं है। उनके लिए राजनीतिक सामाजिक आचरण की भी समझ नही है। जो कम्प्युनिस्ट पार्टी के सिद्धान्त और व्यवहार के बीच व्याप्त है। आचार्य जी की पत्नी, माता जी, पोता रविकान्त और उसकी पत्नी सुहासिनी, अयोध्या में शहीद बिजलानी भाईयों की अन्धभक्त 'थुलथुल माँ' लहँकट बाबा और जमील मियाँ के पिता गफ्फार मियाँ जैसे पात्र भी है जो अपनी तीक्ष्ण अथवा असहाय उपस्थिति से तत्क्षण छाप छोडते है और फिर ओझल हो जाते है । अनेक अनाम चेहरे है जो सामूहिक उन्माद से ग्रस्त आक्रोशित हैं या संस्कार भीरू-भीड़ है जो रामजन्म भूमि दर्शन हेतु इकट्ठी हुई है।

उपन्यास कुल चार खण्डों में विभक्त है:-

1. गृह जंजाल
2. प्रस्थान-पर्व
3. देव-श्मशान
4. पुनश्च

प्रथम तीन के नायक आचार्य जी है और ये आचार्य जी की संघर्षशील जीवन यात्रा के तीन निर्णायक चरण है जिन्हें सर्वात्मन सामान्तर युद्ध के रूप में याद करता है। वैसे तो सर्वात्मन का ध्यान प्रथम चरण पर नही है, लेकिन यह भी सामान्तर युद्ध ही था। अन्तिम खण्ड पुनश्च 6 दिसम्बर 1992 की घटना के 10 वर्ष बाद सर्वात्मन के अयोध्या में पुनर्भ्रमण पर केन्द्रित है। अब अयोध्या का नक्शा बिल्कुल बदल गया है। अब यह कुछ और उजड्ड बना है जहाँ लहलहाते गेहूँ और आलू के खेत थे वहाँ अब नए-नए परमहंस और अखाड़े काबिज है। पाँच बूढे मुसलमानों की छोटी सी बस्ती का अब नामोनिशान नही है। सर्वोपरि, विक्षिप्त जमील मियाँ बेतरतीब स्मृति लिए उन्हीं खडँहरों में घूम रहे है।

''मेरे कमरे में सियासत हो रही है।.... बडा शोर है? सोने नही देते। अल्लामा इकबाल आए थे उन्होनें दाढी रख ली।''[3]

लेकिन जमील मियाँ के पास न अहंकार था न महत्वाकांक्षा ही। वह तो धर्मान्धों की उजड्ड अहंकारी राजनीतिक-धार्मिक महत्वाकांक्षा के शिकार हुए हैं दलित कुल में जन्में अति संवेदनशील नवगीतकार एवं खूबसूरत इंसान देवेन्द्र कुमार जिन्हे बकौल केदारनाथ सिहँ, लगता था कि लोग अनवरत उनका पीछा कर रहे है। गोरखपुर के भेडिघ्या-माहौल ने देवेन्द्र कुमार को विक्षिप्त किया था और अयोध्या के वैसे ही माहौल ने जीमल मियाँ को विक्षिप्त बनाया है यद्यपि दोनों ही यथासम्भव अपने को ढालते रहें। राजनीति अथवा धार्मिक उन्माद नहीं जानता कि भले एवं संवेदनशील लोगों पर क्या गुजरती है और कैसे-कैसे कितनी कीमत चुकाते है और सत्ता समर्थित उन्माद की विनाशलीला का चरित्र।

उपन्यास का पहला खण्ड गृह जंजाल आचार्य जी प्रोफेसर तत्सत् पांडेय की पारिवारिक एवं विश्वविद्यालयी जिंदगी से सम्बन्धित है। दरअसल यह जिंदगी नहींएबल्कि पारिवारिक एवं विश्वविद्यालयी सड़ाँध के विरूद्व आचार्य जी का असफल समान्तर युद्ध है। राजा-पुरोहित के अत्यन्त मेधावी बेटे थे इसीलिए उच्च-शिक्षा सोर्वोन में हो गई। वहीं मार्क्सवादी बने और भारत लौटकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवक्ता बने स्वाधीनता संग्राम में सीधी शिरकत कर सकते थे लेकिन घर की परिस्थितियाँ बाधक बनी। राजनेताओं में उन्हें नेहरू पसन्द थे क्योंकि भारत में वहीं एक ऐसी शख्सियत थे जो यूरोप और हिन्दुस्तान दोनों जगह शक के दायरे से बाहर थे। नेहरू जी का पुस्तक-प्रेम को देखकर उन्होनें उन्हें अपनी पुस्तक देखी थी, नेहरू जी के यहाँ आनन्द भवन में उनका आना-जाना था और उनके माध्यम से वह गाँधी जी और गुरूदेव टैगोर से मिले थे। इससे आचार्य जी के मानसिक संस्कार का पता चलता है। वह प्रतिबद्ध मार्क्सवादी है। अत: अनिवार्यत: अनीश्वरवादी और जात-पातवाद एवं साम्प्रदायिकता के विरोधी भी, तथा भारतीय सांस्कृतिक अतीत के प्रति रैडिकल मोच के कायल है। ऐसा व्यक्ति एक गरीब परम्परारूद्र पुरोहित परिवार और पूरब का ऑक्सफोर्ड इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जात-पाँतवादी साम्प्रदायिक एवं अवसरवादी माहौल में बने रहने के लिए अभिशप्त या। एक मुलाकात में उन्होनें नेहरू जी से कहा भी था। ''पुरोहिताई पर परिवार चलता था अब पिताजी के जाने के बाद वह भी नहीं रही और मैं व्यावहारिक रूप में अक्षम हूँ आपकी तरह शक्तिशाली और धुन का पक्का भी नही। न वो प्रतिभा है और न साहस और फिर... मुझे लगता है। मैं इतिहास से बाहर का आदमी हूँ मेरी उपयोगिता नही...।''[4]

उपन्यास का दूसरा खण्ड 'प्रस्थान पर्व' 3 दिसम्बर, 1992 प्रारम्भ होता है। उनका शिष्य सविनय ने 4 दिसम्बर को अयोध्या में एक सचल ग्रामीण पुस्तकालय का उद्घाटन करने और 'किताबे शक पैदा करती है' विषय पर व्याख्यान देने के लिए उन्हें आमन्त्रित किया है। उपन्यास सविनय के फोन और आचार्य जी के निर्णय के साथ ही आरम्भ होता है। बाबरी मस्जिद की घटना को लेकर यह मान्यता है कि राजनीति का जनता के इस उन्माद का नैतिक निमन्त्रण होना चाहिए, अन्यथा इसकी आवश्यकता क्या है। आचार्य जी अकेले है। सामूहिक विरोध उनके बूते का नही लेकिन वह मुर्दे की तरह जीना नहीं चाहते। वह असहमत होना जरूरी मानते है।''[5]

उपन्यास के तीसरे खण्ड देव श्मशान में धर्म के प्रति उपर्युक्त दृष्टि का ही प्रतिपादन है। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि अयोध्या देवस्थली नहीं, देव श्मशान है।

आचार्य जी तुलसी को महान मानते हुए भी अप्रासंगिक मानते है और हिन्दू जनमानस पर उनके प्रभाव को खतरनाक बताते है, इसी जोश में वह अयोध्या को शौचालय घोषित कर डालते है। गदर मूर्तिमान हो उठता है। पंडाल और पुस्तके लूट ली जाती और कुछ जला दी जाती है। आचार्य जी सही है लेकिन उनका स्वर और समय दोनों गलत थे। अयोध्या में अवधी तहजीब को दरकिनार करते हुए हिन्दू-मुस्लिम धार्मिक भिन्नता को द्वन्द्वग्रस्त बनाने के लिए इसका राजनीतिकरण किया जा रहा है। हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक आफताब अली की मजार का अब नामोंनिशाँ तक नहीं है। मियाँ गफ्फार खाँ जैसे अनेक बुजुर्गों को अयोध्या छोडने के लिए विवश किया गया है जो यहीं जमींदोज होना चाहते थे, कुल मिलाकर अयोध्या को 'नया वेटिकन' बनाने की तैयारी है जो असम्भव है क्योंकि यहाँ अनेक मल्ल पोप है और खून-खराबा यहाँ का चलन है और यहाँ कलात्मक सौन्दर्य भी नहीं है जो रोम के वेटिकन में है।

दरअसल, इस समूचे विराट धार्मिक तांडव का निषेध उस राजनीतिक संस्कृति की निषेधात्मक समालोचना है जिसे आचार्य जी गेरूए में लिपटा हुआ सत्ता का घिनौना, जर्जर खेल बताते है।

उपन्यास में बहुत सारी राजनीतिक टिप्पणियाँ है जो लेखक की राजनीति सम्बन्धी सोच-समझ को अभिव्यक्त करती है। आचार्य जी को बौद्धिक दुनियाँ के इसी दो मुँहेपन, अस्पष्टता एवं संकीर्ण स्वार्थपरता से गहरी शिकायत है। जिसने आलोचना की संस्कृति को विनष्ट किया है इसीलिए जो गलत हो रहा है वह ठीक है की अवसरपरस्त नैतिकता द्वारा साम्प्रदायिक उन्माद को सत्ता तक पहुंचाने का माहौल बनाया है। लेखक इस दोमुँहेपन को लोहिया जी के राजनीतिक सांस्कृतिक चिन्तन में भी देखता है। आचार्य जी की समझ है कि उनकी सांस्कृतिक सोच में राम-कृष्ण-शिव तथा पौराणिक चिन्तन का कचरा बहता है, जो उन्हें नेहरू की ओर कम, सावरकर की ओर अधिक ले जाता है।[6]

अत: आचार्य जी लोहिया और जयप्रकाश को गाँधीजी के धर्मतत्व का उत्तराधिकारी बताते हैं जो निरापद नहीं है लेकिन लोहियाजी के एक अवलोकन मे वह ऐतिहासिक सत्य भी देखते हैं। 'भारत में जातियाँ ही वर्ग हैं। लेकिन क्या यह 1992 या 2003 का भी सच है? क्या इस स्थापना में जात-पात का राजनैतिक कचरा नही बह रहा? इसी प्रकार सेवियत सत्ता के विखण्डन के बावजूद लोहिया के निबन्ध 'अर्थशास्त्र: मार्क्सवाद के बाद को हिमाकत बताना कितना बुद्धिसंगत है?'

उनकी दृष्टि में कुल मिलाकर सिर्फ नेहरू में ही 'महात्मा जी के व्यक्तित्व का प्रसार' है इस प्रकार वह लोहियावादियों और हिन्दुत्वादियों के बीच एक मानसिक संगति देखते हैं जो उन्हें अन्तत: हिन्दुत्ववादियों के खेमे में ले जाती है। वस्तुत: राष्ट्र धर्म एवं संस्कृति के नाम पर लोहियावादी सेक्युलर प्रगतिशीलता के चरम विरोधी रहे है जिससे समय-समय पर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को वैचारिक समर्थन मिला है। राष्ट्रवादी समाजवादियों की नीति का यही ह्रस सारी दुनिया में हुआ है। इसके बावजूद यही प्रश्न बना रहता है कि राम-कृष्ण-शिव अल्लाह, कुरान, गौरेया या .बाइबिल का क्या किया जाए?

आखिर क्यों नेहरू की सेक्युलर दृष्टि शिक्षा और लोकतन्त्र के उत्तरोतर विस्तार के बावजूद, पराजित- सी है। हमारी आजादी गांधी जी के 'स्वराज के सपने सत्य और अहिंसा के सत्याग्रही प्रयोगों तथा नेहरू के समाजवादी-लोकतान्त्रिक' नियति के साक्षात्कार में आरम्भ हुई, फिर लोहिया और लोहियावादियों द्वारा भारतीयता की आड़ में राष्ट्रवादी समाजवाद का बाना धारण किए मुलायम और लालू-प्रसाद के जात-पातवादी समाजवाद और मायावती-कांशीराम के अम्बेडकरवादी लोकतन्त्र के काँटो में उलझकर सावरकर और सावरकरवादियों की गोद में सुरक्षित महसूस करने लगी है। दूधनाथ सिंह ने बडे ही व्यथित मन एवं संवेदनशील अंकन द्वारा इन सारे कोणों को किसी न किसी रूप में प्रस्तुत किया है। यद्यपि केन्द्र में धार्मिक एवं जात-पॉतवादी अन्धता है जिसका उत्तर सेक्यूलर कम्यूनिस्ट देने में अक्षम रहे, लेकिन लेखक की दृष्टि में इस सबके मूल में है। वह ष्स्फटिक फाँकष् जो जाति और जाति, सम्प्रदाय और सम्प्रदाय, परिवार और व्यक्ति और राजनीति यथार्थ तथा राजनीतिक प्रतिबद्धता और व्यवहार के बीच विद्यमान है और सबके मूल में है। भारतीय जनमानस की मिथकीय संरचना जो इतिहास को नकारती थी। ऐसे में लेखकीय सहानुभूति आचार्य जी के साथ है। जैसे 'महाभारत' के रचनाकार की सहानुभूति भीष्म के साथ है अन्यथा आचार्य जी जैसे विराट, जानदार और कन्विसिंग पात्र की इतनी सजीव कल्पना सम्भव नहीं थी। यह पात्र ही 'आखिरी कलाम' को महाकाव्यात्मक आयाम देता है और इसके छितराव को कलात्मक अन्विति प्रदान करता है।

रचनाकार दूधनाथ सिंह की दुनियॉ विचारात्मक लेखन की दुनियॉ है। राजनीति का जो रूप होना चाहिए, वह वर्तमान में नही है। आज राजनीति वह है, जिसमें राजनेता अपना घर भरता है। वह अपनी कुर्सी बचाये रखने के लिए निर्दोष जनता का शोषण करता है। राजनीतिज्ञों की कुटिल चाल चारों तरफ पैर पसार रही है। जिसमें आम आदमी ही फँसता है। आज राजनीति अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक चुकी है। इस अवस्था के कारण ही सामाजिक संबंध टूट रहे है।

''राजनीति हमारी जिन्दगी का एक जरूरी हिस्सा बन गई है। हमारी साँस का उतार चढाव और रक्त का संचार तक राजनीति से प्रभावित है।''[7]

भारतीय लोकतन्त्र मे जिन अपराधिक तत्वों का समावेश हो चुका है। उनके चलते देश में राष्ट्रवाद जैसी भावनाएँ भी खत्म होने लगी है। जिस सत्ता का शासन होता है जो पार्टी केन्द्र में होती है, वह अपने फायदे के लिए उन्हीं राज्यों का ध्यान रखती है। आखिरी कलाम उपन्यास में राजनीति षडयंत्र का आधार बना, सत्ताधारी विपक्षी पार्टी दोनों फायदा उठा रहे है। आखिरी कलाम उपन्यास राजनीति धरातल पर लिखा गया उपन्यास है। जहाँ राम-राम सत्य है को जै श्री राम में परिवर्तित कर सत्ता पक्ष उसका लाभ लेना चाहती है।

''अपनी सम्पूर्ण औपन्याक्षिक संरचना में आखिरी कलाम हिन्दू फाँसीवादी खतरे की पृष्ठभूमि में एक ऐसी जीवन्त जिरह है जो धर्म, धर्मनिरपेक्षता, जनतन्त्र मीडिया, मुसलमान, वामपंथ से लेकर लोहियावादी राजनीति का विस्तार लिए है लेकिन उपन्यासकार का सर्वाधिक मुख्य उद्देश्य है। हिन्दू धर्म की मनुष्य विरोधी संरचना को बेपर्दा करने तथा धर्मनिरपेक्ष शक्तियों के उस पोले आधार को उजागर करने में जो उसकी विफलता के लिए जिम्मेदार हैं।''[8]

दूधनाथ सिंह ने अपने उपन्यास 'आखिरी कलाम' में हिन्दुत्व के उभार के फलस्वरूप हिन्दू नेताओं की क्रूर नीतियों का वर्णन किया है जो कारसेवकों की धार्मिक भावनाओं को भडकाकर बहुत बड़े जनसमुदाय को वोट बैंक में बदल देना चाहते है।

''अयोध्या में कारसेवकों की आक्रामकता व बाबरी मस्जिद के आसन्न ध्वंस पर धर्मनिरपेक्ष शक्तियों से उसका सीधा चुनौतीपूर्ण सवाल करते है - कहाँ है तुम्हारे वर्ण-युक्त मानस की जनता? यह मंदिर-मस्जिद का सवाल नहीं ----- यह मनुष्य होने या न होने का सवाल है।''[9]

"आखिरी कलामष् उपन्यास व्यापक सामाजिक-राजनैतिक मुद्दों पर सवाल खडे करता है। वर्तमान चुनावी परिप्रेक्ष्य में लगातार साम्प्रदायिकता का मुद्दा उठाया जा रहा है। ध्रुवीकरण की राजनीति अपने चरम पर है, ''भारतीय समाज और राजनीति के बढते हुए रूढिवाद, अंधविश्वास और धर्मतांत्रिक राजनीति के अभिमानों के फलस्वरूप बढता हुआ उन्माद और उसके प्रभाव में पैदा हुआ आतंक।''[10]

समकालीन समाज के जीवन पर राजनीति का व्यापक प्रभाव पड़ा है। राजनीति जिस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ी थी वो था त्याग और सेवा। उसमें परहित की भावना थी समाज का विकास था। लोगों की खुशहाली थी, परन्तु आज केवल पैसा बटोरना ही राजनीति का पहला और अन्तिम उद्देश्य बन गया है।

''बाबरी मस्जिद ध्वंस की पृष्ठभूमि पर कॅन्द्रित दूधनाथ सिंह का उपन्यास 'आखिरी कलाम' उनकी रचनात्मकता का शिखर है । औपन्यासिक कलेवर में यह कथाकृति साम्प्रदायिक फासीवाद के विरोध में एक जीवंत जिरह है जो धर्म, धर्मनिरपेक्षता, जनतंत्र, मीडियाए मुसलमान व वामपंथ से लेकर लोहियावादी राजनीति तक का विस्तार लिए हुए है।''[11]

'आखिरी कलाम' उपन्यास राजनीति का नग्न यथार्थ है। आज की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखे तो बाबरी मस्जिद को तोड़कर मन्दिर बनाया गया है। कोई भी राजनीति पार्टी इस बात को कहने का साहस नहीं रखती कि वहाँ मस्जिद ही बनायी जाये क्योंकि टूटी तो मस्जिद ही। "आखिरी कलाम" उपन्यास में राजनीति से पीड़ित आमजन का दर्द साफ देखा जा सकता है।

## संदर्भ-ग्रन्थी सूची


1. सिंह, दूधनाथ, कहासुनी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली 2005, पृ0. 86-87
2. सिंह, दूधनाथ, ष्आखिरी कलामष् राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली 2018, पृ0. 340
3. वही, पृ0. 433
4. वही, पृ0. 29
5. वही, पृ0. 32
6. वही, पृ0. 195
7. सारिका, पृ0. 7, 1985
8. यादव, वीरेन्द्र, उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, पृ0. 213-214
9. सिंह, दूधनाथ, "आखिरी कलाम" राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. दिल्ली 2018, पृ0. 150
10. ठाकुर, शगेन्द्र, उपन्यास की महान परम्परा, 1996, पृ0. 178
11. पहली बार पत्रिका वीरेन्द्र यादव का स्मृति-आलेख दूधनाथ सिंह : 'आखिरी कलाम' तो अभी बाकी था, पृ0 03